समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation



कक्षा - 10

हिंदी (आलोक)

अध्याय – 1

नींव की ईंट

(रामवृक्ष बेनीपुरी (1902-1968))

भाग – 1

पल्लवी कलिता

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

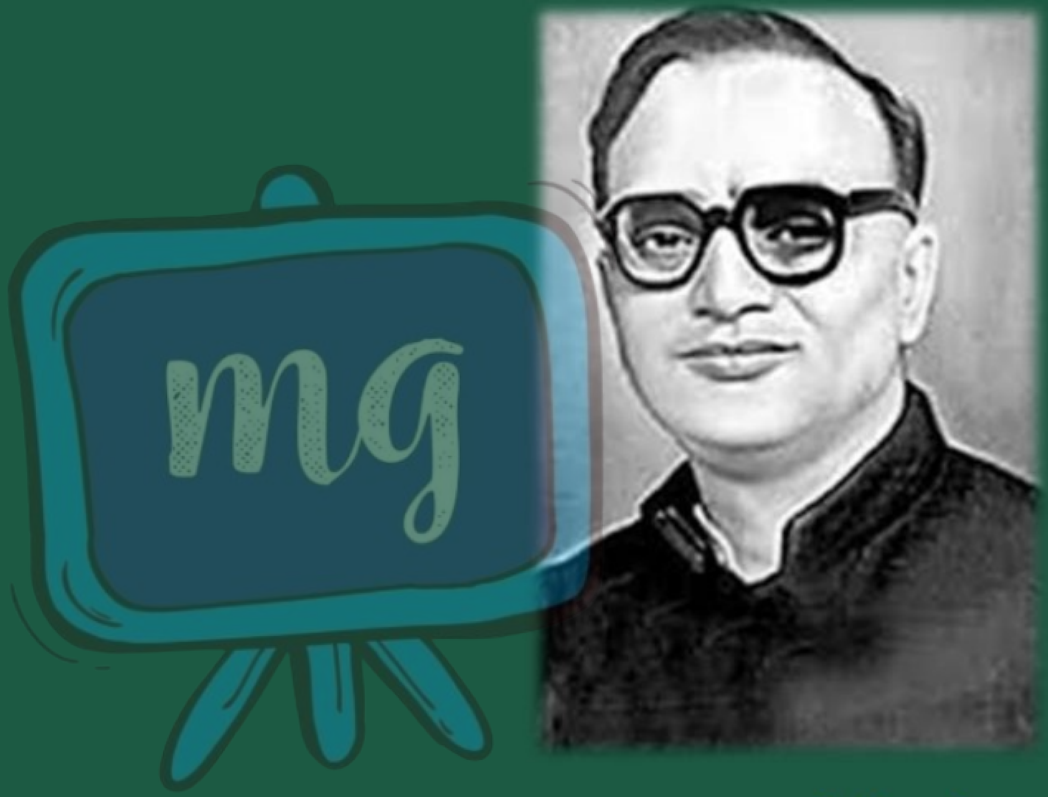

रामवृक्ष बेनीपुरी

कवि परिचय

- **जन्म :** जन्म 1902 ई. में बिहार के मुजफ्फरपुर जिले के अंतर्गत बेनीपुर नामक गाँव में हुआ था।
- **पालन पोषण :** बचपन में ही माता-पिता के देहावसान हो जाने के कारण आपका पालन-पोषण ननिहाल में हुआ

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

☛ **रचना :** लगभग 100 है, जिनमें से अधिक रचनाएँ 'बेनीपुरी ग्रंथावली' नाम से प्रकाशित हैं।

☛ भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के सक्रिय सेनानी के रूप में आपको 1930 ई. से 1942 ई. तक का समय जेल-यात्रा में ही व्यतीत करना पड़ा।

☛ **कृतियाँ :** 'गेहूँ और गुलाब' (निबंध और रेखाचित्र), 'वंदे वाणी विनायकौ' (ललित गद्य), 'पतितों के देश में' (उपन्यास), 'चिता के फूल'

(कहानी संग्रह), 'माटी की मूरतें' (रेखाचित्र), 'अंबपाली' (नाटक)

☛ स्वर्गवास : 1968 ई.



समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

नींव की ईंट

वह जो चमकीली, सुंदर, सुघड़ इमारत हैं, वह किस पर टिकी है ? इसके कंगूरों को आप देखा करते हैं, क्या कभी आपने इसकी नींव की ओर भी ध्यान दिया है ? दुनिया चकमक देखती है, ऊपर का आवरण देखती है, आवरण के नीचे जो ठोस सत्य है उस पर कितने लोगों का ध्यान जाता है ?

सुघड़	: सुगठित	कंगूरा	: शिखर
ठोस	: प्रकृत		

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation



ठोस 'सत्य' सदा 'शिवम्' होता ही है, किंतु वह हमेशा ही 'सुंदरम्' भी हो यह आवश्यक नहीं।

सत्य कठोर होता है, कठोरता और भद्दापन साथ-साथ जन्मा करते हैं, जिया करते हैं। हम कठोरता से भागते हैं, भद्देपन से मुख मोड़ते हैं -इसीलिए सत्य सेभी भागते हैं। नहीं तो, हम इमारत के गीत नींव के गीत से प्रारंभ करते।

भद्दापन : कुत्सित

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation



वह ईंट धन्य है, जो कट-छँटकर कंगूरे पर चढ़ती है और बरबस लोक-लोचनों को अपनी ओर आकृष्ट करती है। किंतु, धन्य है वह ईंट, जो जमीन के सात हाथ नीचे जाकर गड़ गई और इमारत की पहली ईंट बनी ! क्योंकि इसी पहली ईंट पर उसकी मजबूती और पुख्तेपन पर सारी इमारत की अस्ति-नस्ति निर्भर करती है।

पुख्तापन : दृढ़ता अस्ति-नस्ति : अस्तित्व

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
সমগ্র শিক্ষা

Under CSR Support by
ipca | Foundation

उस ईंट को हिला दीजिए, कंगूरा बेतहाशा जमीन पर आ रहेगा।

कंगूरे के गीत गानेवाले हम, आइए, अब नींव के गीत गाएँ।

वह ईंट जो जमीन में इसलिए गड़ गई कि दुनिया को इमारत मिले, कंगूरा मिले !

वह ईंट, जो सब ईंटों से ज्यादा पक्की थी, जो ऊपर लगी होती तो कंगूरे की शोभा सौ गुनी कर देती !

बेतहाशा : অতি শীঘ্রতাৰে

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
সমগ্র শিক্ষা

Under CSR Support by
ipca | Foundation

किंतु, जिसने देखा, इमारत की पायदारी उसकी नींव पर मुनहसिर होती है, इसलिए उसने अपने को नींव में अर्पित किया। वह ईंट, जिसने अपने को सात हाथ जमीन के अंदर इसलिए गाड़ दिया कि इमारत जमीन के सौ हाथ ऊपर तक जा सके।

पायदारी	:	মজবুত, শক্তিশালী
मुनहसिर	:	নির্ভৰ

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
সমগ্ৰ শিক্ষা

Under CSR Support by
ipca | Foundation

वह ईंट जिसने अपने लिए अंधकूप इसलिए कबूल किया कि ऊपर के उसके साथियों को स्वच्छ हवा मिलती रहे, सुनहली रोशनी मिलती रहे।

वह ईंट, जिसने अपना अस्तित्व इसलिए विलीन कर दिया कि संसार एक सुंदर सृष्टि देखे।

सुंदर सृष्टि ! सुंदर सृष्टि हमेशा ही बलिदान खोजती है, बलिदान ईंट का हो या व्यक्ति का।

अंधकूप	:	অন্ধকাৰেৰে আৱৰা ঠাই
सुनहली	:	সোণালী ৰঙৰ

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

सुंदर इमारत बने, इसलिए कुछ पक्की पक्की लाल ईंटों को चुपचाप नींव में जाना है।

सुंदर समाज बने, इसलिए कुछ तपे-तपाए लोगों को मौन-मूक शहादत का लाल सेहरा पहनना है।

शहादत और मौन-मूक ! जिस शहादत को शोहरत मिली, जिस बलिदान को प्रसिद्धि प्राप्त हुई, वह इमारत का कंगूरा है- मंदिर का कलश है।

तपे-तपाए	:	কষ্ট সহ্য কৰা
मौन-मूक	:	মৌনতা

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

हाँ, शहादत और मौन-मूक ! समाज की आधारशिला यही होती है।

ईसा की शहादत ने ईसाई धर्म को अमर बना दिया, आप कह लीजिए। किंतु मेरी समझ से ईसाई धर्म को अमर बनाया उन लोगों ने, जिन्होंने उस धर्म के प्रचार में अपने को अनाम उत्सर्ग कर दिया।

उनमें से कितने जिंदा जलाए गए, कितने सूली पर जढ़ाए गए, कितने वन-वन की खाक छानते जंगली जानवरों के शिकार हुए, कितने उससे भी भयानक भूख-प्यास के शिकार हुए।

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

उनके नाम शायद ही कहीं लिखे गए हों- उनकी चर्चा शायद ही कहीं होती हो किंतु ईसाई धर्म उन्हीं के पुण्य-प्रताप से फल-फूल रहा है।

वे नींव की ईंट थे, गिरजाघर के कलश उन्हीं की शहादत से चमकते हैं।

आज हमारा देश आजाद हुआ सिर्फ उनके बलिदानों के कारण नहीं, जिन्होंने इतिहास में स्थान पा लिया है।

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation



देश का शायद कोई ऐसा कोना हो, जहाँ कुछ ऐसे दधीचि नहीं हुए हों, जिनकी हड्डियों के दान ने ही विदेशी वृत्रासुर का नाश किया।

हम जिसे देख नहीं सकें, वह सत्य नहीं है, यह है मूढ़ धारणा!

ढूँढ़ने से ही सत्य मिलता है। हमारा काम है, धर्म है, ऐसी नींव की ईंटों की ओर ध्यान देना।

मूढ़ : भ्रान्त

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
সমগ্র শিক্ষা

Under CSR Support by
ipca | Foundation

सदियों के बाद नए समाज की सृष्टि की ओर हमने पहला कदम बढ़ाया है।

इस नए समाज के निर्माण के लिए भी हमें नींव की ईंट चाहिए। अफसोस, कंगूरा बनने के लिए चारों ओर होड़ा-होड़ी मची है, नींव की ईट बनने की कामना लुप्त हो रही है!

होड़ा-होड़ी : দৌৰা-দৌৰি

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

सात लाख गाँवों का नव-निर्माण ! हजारों शहरों और कारखानों का नव-निर्माण! कोई शासक इसे संभव नहीं कर सकता। जरूरत है ऐसे नौजवानों की, जो इस काम में अपने को चुपचाप खपा दें।

जो एक नई प्रेरणा से अनुप्राणित हों, एक नई चेतना से अभिभूत, जो शाबाशियों से दूर हों दलबंदियों से अलग।

अभिभूत : आनन्द मग्न

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

जिनमें कंगूरा बनने की कामना न हो, कलश कहलाने की जिनमें वासना न हो। सभी कामनाओं से दूर सभी वासनाओं से दूर।

उदय के लिए आतुर हमारा समाज चिल्ला रहा है। हमारी नींव की ईंटें किधर हैं ? देश के नौजवानों को यह चुनौती है !

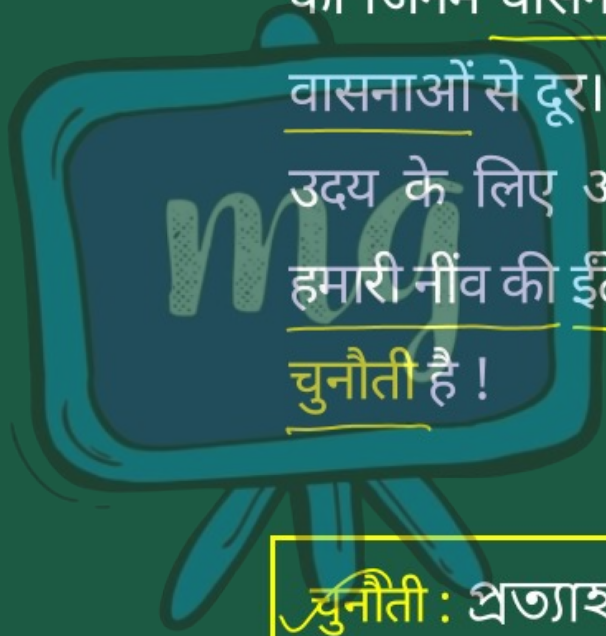

चुनौती : प्रत्याहवान

मूल्यांकन



1 | ठोस सत्य सदा क्या होता है ?

A शिवम

B सुन्दरम

C कठोरतम

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

मूल्यांकन

Under CSR Support by
ipca | Foundation



2 दुनिया क्या देखती है ?

A भद्दापन

B भोलापन

C चकमक

मूल्यांकन



3 | उदय के लिए आतुर हमारा समाज क्या चिल्ला रहा है ?

